[59] Seat No. _____ No. of printed pages : 2

**SARDAR PATEL UNIVERSITY**
**M.A. - Hindi (IV Semester) (NC) Examination**
**Saturday, 22nd October 2016**
**2.00 pm - 5.00 pm**
**PA04CHIN03 : छायावादोत्तर काव्य**

**Total Marks: 70**

प्र.१ 'उर्वशी' काव्य के तृतीय अंक का वर्ण्य विषय बतलाते हुए इस अंक की शिल्पगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । (१७)

**अथवा**

प्र.१ अज्ञेय का साहित्यिक परिचय देते हुए लम्बी कविता के रूप में 'असाध्य वीणा' कविता का स्वरूप समझाइए ।

प्र.२ पठित कविताओं को केन्द्र में रखते हुए नागार्जुन की काव्य संवेदना एवं विचारधारा को स्पष्ट कीजिए । (१७)

**अथवा**

प्र.२ 'अँधेरे' में काव्य में व्यक्त कवि के विचारों को सोदाहरण निरूपित करें ।

प्र.३ टिप्पणी लिखें **(किन्हीं दो)** (१८)

(१) 'उर्वशी' शीर्षक की सार्थकता (३) नागार्जुन का साहित्यिक परिचय
(२) 'नदी के द्वीप' कविता का उद्देश्य (४) 'अँधेरे में' काव्य की भाषागत विशेषताएँ

प्र.४ सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए – (१८)

(क) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावन्त,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका ।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई ।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति व्यर्थ नहीं था ।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर भी ।
इसे जब सच्चा-स्वर-सिद्ध गोद में लेगा ।

**अथवा**

सो तो मैं आ गयी, किन्तु, यह वैसा ही आना है,
अयस्कान्त ले खींच अयस् को जैसे निज बाँहों में
पर, इस आने में किंचित् भी स्वाद कहाँ उस सुख का,
जो सुख मिलता उन मनस्विनी वामलोचनाओं को,
जिन्हें प्रेम से उद्वेलित, विक्रमी पुरुष बलशाली
रण से लाते जीत या कि बल-सहित हरण करते हैं ।

(ख) हमें हॉस्टल के गेट पर
पहुँचाकर
निहायत नरम आवाज में
वो कहने लगा -
''बाबाजी, हम अब चुटैया भी रखेंगे
आठ-दस रोज की
भूखमरी के बाद
हमारे अंदर
य'अक्किल फूटी है !
बाबाजी,
रुदराछ के मनके
अच्छी मजूरी दिला रहे हैं

**अथवा**

जिंदगी के....
कमरों मे अंधेरे
लगाता है चक्कर;
कोई एक लगातार;
आवाज़ पैरों की देती है सुनाई
बार-बार....बार-बार,
वह नहीं दीखता... नहीं ही दीखता,
किंतु, वह रहा घूम
तिलिस्मी खोह में गिरफ्तार कोई एकः
भीत-पार आती हुई पास से,
गहन रहस्यमय अंधकार-ध्वनि-सा
अस्तित्व जनाता
अनिवार कोई एक

*****